

पहली कक्षा में रिमझिम द्वारा हिंदी भाषा-शिक्षण

रमेश तिवारी*

हिंदी भाषा-शिक्षण के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* और *भारतीय भाषाओं के शिक्षण विषयक* आधार पत्र में 'समग्र भाषा पद्धति' द्वारा शिक्षण पर जोर डाला गया है। इसी आधार पर रा.शै.अ.प्र.प., दिल्ली द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में 1-5 तक हिंदी शिक्षण के लिए *रिमझिम* पाठ्यपुस्तक का निर्माण किया गया है। *पढ़ना सिखाने की शुरुआत* शीर्षक पुस्तक और आलेख के अनुसार, "पहली कक्षा के शिक्षकों में यह मान्यता बैठी हुई है कि पढ़ना सिखाने की शुरुआत वर्ण-परिचय से होनी चाहिए। इस मान्यता के चलते वे पहली कक्षा की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* में शुरुआत से ही मात्रा वाले शब्द देखकर परेशान हो जाते हैं। वे पूछते हैं कि जब बच्चा अक्षरों को ही नहीं पहचानता तो मात्रा वाले शब्दों से कैसे जूझेगा।" आगे इस लेख में स्पष्ट किया गया है कि पुस्तक *रिमझिम* को पढ़ाने की अपेक्षित विधि क्या है। यह निश्चित रूप से परंपरागत ध्वनि-वर्ण पद्धति नहीं है, बल्कि समग्र भाषा पद्धति है। इस संदर्भ में *रिमझिम* पाठ्यपुस्तक पर एक दृष्टिपात अपेक्षित है। इस आलेख में *रिमझिम-1* के कुछ पाठों के हवाले से शिक्षक समुदाय के लिए भाषा की कक्षा में गतिविधि आधारित शिक्षा, खेल-खेल में शिक्षा, समग्रतावादी दृष्टिकोण के साथ शिक्षा को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है। शिक्षक अपनी आवश्यकतानुसार इनकी मदद से व अन्य नवाचारों द्वारा कक्षा-शिक्षण को और बेहतर एवं प्रभावी बनाने में समर्थ हों इस आशा से इस आलेख को लिखा गया है और आलेख में *रिमझिम 1* से कुछ चित्र अकादमिक दृष्टि से उपयोग किए गए हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भाषा-शिक्षण संबंधी जो सिफारिशें की गई थीं और भारतीय भाषाओं संबंधी आधार पत्र में जिन्हें विस्तार से समझाया गया था, उन्हीं बिंदुओं और प्रविधियों को ध्यान में रखते हुए रा.शै.अ.प्र.प. दिल्ली द्वारा *रिमझिम* का निर्माण किया गया है और आज भी यह पुस्तक प्राथमिक शिक्षा के

लिए आधार पुस्तक के रूप में इस्तेमाल की जाती है। कई राज्य सरकारों ने अपनी स्वतंत्र पुस्तकें भी निर्मित की हैं, किंतु उन्होंने भी *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* और *भारतीय भाषाओं के आधार पत्र* की सिफारिशों का अनुपालन किया है। उल्लेखनीय है कि इस आलेख का संदर्भ *रिमझिम-1* तक ही सीमित है।

* वरिष्ठ हिंदी संकाय सदस्य, आई.टी.ई.आई., टेक महेंद्रा फ़ाउंडेशन, शक्ति नगर, दिल्ली 110007

पाठ्यपुस्तक का अवलोकन

पाठ्यपुस्तक *रिमझिम 1* के अंतर्गत कुल 23 पाठ हैं। पुस्तक के आरंभ में ही 'बड़ों से दो बातें' का प्रकाशन किया गया है। किताब को पढ़ने-पढ़ाने से पूर्व इस पर ध्यान दिया जाए तो बहुत-सी अनुत्तरित जिज्ञासाओं का जवाब मिल सकता है। इसके बाद यदि हम इस पुस्तक को गौर से देखें तो पाएँगे कि 'स्कूल का पहला दिन' शीर्षक से जो चित्र पुस्तक में उपलब्ध है, वह हमें कक्षा की आंतरिक साज-सज्जा के साथ विद्यार्थियों एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं के अंतःसंबंध को भी दर्शाता है। इस चित्र में पूरी कक्षा को व्यवस्थित रूप में दिखाया गया है। कक्षा के एक कोने में रीडिंग कार्नर की संकल्पना, अपनी मनपसंद किताबें देखती एक बच्ची, खिड़की से बाहर बोलते-बतियाते दो बच्चे, झूला झूलती एक बच्ची, कक्षा को बाहर से छुप-छुप कर झाँकता एक बच्चा, साथ ही श्यामपट्ट पर अंकित है— स्कूल का पहला दिन। कक्षा में विभिन्न रंग, फल, फूल पत्तियों को दर्शाते चित्र और एक लोकप्रिय बाल कविता, उसमें खुशी से उछलते बच्चे-बच्चियों समेत चित्रों व कलाकृतियों से समृद्ध, दरवाजे के पास करीने से रखा कूड़ा पात्र (डस्टबिन), बाहर चाँपाकल पर पानी पीते-पिलाते बच्चे, पेड़ पर ऊपर की ओर कुछ देखते-दिखाते दो बच्चे, अपनी कुर्सी-मेज को छोड़कर बच्चों के मध्य में बच्चों के साथ ही नीचे दरी पर बैठी अध्यापिका, उनके आसपास सहज भाव और प्रफुल्लित मुद्रा में बैठे बच्चे, एक दिव्यांग बच्चा (जिसकी बैसाखी वहीं बगल में रखी हुई है), पीछे की ओर दो बालक-बालिका परस्पर बातें करते हुए। कहा जाता है कि एक चित्र अथवा कार्टून सैकड़ों शब्दों से अधिक महत्वपूर्ण और अधिक प्रभावी होता है परंतु

खेद का विषय है कि प्रायः अध्यापक-अध्यापिकाएँ किताब हाथ में लेते ही सीधे पाठों को पढ़ाना शुरू कर देते हैं और किताब की भूमिका, 'बड़ों से दो बातें' शीर्षक से छपी सामग्री को अपने लिए गैर-ज़रूरी मानते हैं। वे यदि इन्हें ध्यान से देखें-पढ़ें तो पाठ को पढ़ाने संबंधी बहुत-सी समस्याओं का स्वतः निदान हो सकता है। अध्यापक पढ़ाना शुरू करने से पूर्व इन निर्देशों को अवश्य पढ़ें तभी हम इस पुस्तक की सामग्री को बच्चों को पढ़ाते समय अपनाई जानेवाली प्रविधियों की सही जानकारी प्राप्त कर उनका सही अनुप्रयोग कर सकेंगे।

पाठ-विश्लेषण

रिमझिम-1 के कुछ पाठों का अध्ययन-विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है। पहला पाठ है— झूला। यह एक कविता है। बच्चों की सबसे अधिक पसंदीदा विधा कविता है। गेयता, लय, तुक आदि के बल पर कविता का जो बाह्य सौंदर्य है, वह बच्चों के साथ-साथ बड़ों को भी बाँधने में कामयाब होता है। इसलिए झूला कविता में जिन शब्दों और भावों को समाहित किया गया है, वे बच्चों के मनोविज्ञान के अनुरूप हैं। इस कविता में माँ और बच्चे के बीच झूले के बहाने कुछ संवाद हैं और कुछ नए शब्दों से बच्चों को परिचित कराया गया है, जैसे— आसमान, डाली, पत्ता, मजा, दिल्ली, कलकत्ता, नीचे, धरती, उड़, चल, बरस, रहा, रिमझिम-रिमझिम, दल-बादल। रिमझिम-रिमझिम, पत्ता-पत्ता, उड़-चल, उड़-चल में शब्दों अथवा पदबंधों की पुनरावृत्ति से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य के आकर्षण को बच्चे अवश्य महसूस करेंगे और कविता के बहाने भाषा सीखने की ओर प्रवृत्त होंगे।



2. आम की कहानी

एक चित्रकथा।



18

दूसरा पाठ है— आम की कहानी, यह चित्रकथा है। प्रायः बच्चे कार्टून देखकर खुश होते हैं। यह पाठ बच्चों की इसी रुचि को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस प्रकार के पाठों से बच्चों में अनुमान लगाने की क्षमता का विकास होता है। हम सब जानते हैं कि भाषा-शिक्षण के शुरुआती दिनों में चित्रों का महत्व अक्षरों व शब्दों के मुकाबले अधिक होता है। बच्चे अक्षरों अथवा शब्दों को भले न पहचान सकें, किंतु वे चित्रों को बड़ी ही सहजता से पहचानते हैं और पूछने पर बता भी सकते हैं। इस संदर्भ में हम इस पाठ को एक अभ्यास अथवा उदाहरण के रूप में रख सकते हैं। इस चित्रकथा में जो चित्र दिए गए हैं, उनको बारी-बारी से दिखाते हुए यदि अध्यापिका बच्चों से उनके नाम पूछें तो बहुत से बच्चों को चित्र देखकर उनकी पहचान करने एवं नाम बताने में आसानी होगी। इस चित्र को

दिखाकर आप बच्चों से यह पूछ सकती हैं कि चित्र में क्या दिख रहा है? कोई पक्षी, फल, लड़का-लड़की या कुछ और? ऐसे अन्य प्रश्न भी आप अपनी कक्षा और बच्चों की क्षमताओं के अनुरूप पूछ सकती हैं। बच्चे चित्र देखकर उत्तर देने को सहज ही तत्पर होंगे। इस पाठ के अन्य चित्र भी धीरे-धीरे दिखाकर हम पहले उन्हें चित्रों की पहचान करना सिखाकर, फिर इन चित्रों को जोड़ते हुए कहानी बनाने को भी कह सकते हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि बच्चे कक्षा में सुनना-देखना और बोलना शुरू करेंगे। हमें सदा यह याद रखने की ज़रूरत है कि सुनना-बोलना भाषा-शिक्षण के दो प्राथमिक कौशल हैं।



19

ऊपर दिए गए चित्र के मुकाबले इस एक चित्र में कुछ अधिक दृश्य दिखाए गए हैं। यह सरल से कठिन की यात्रा है, किंतु इस चित्र की विशेषता यह है कि इसका संबंध पहले वाले चित्र से जुड़ा हुआ है। इसलिए

बच्चे इस चित्र को पहले वाले चित्र के विस्तार के रूप में ही देखेंगे। अधिक दृश्य बच्चों की समझ को बोलने के अवसर प्रदान करेंगे। इस दृष्टि से इस पाठ के लगभग सभी चित्र बड़े ही उपयोगी हैं, और तो और इस पाठ के अभ्यास में भी बच्चों की सहूलियत के लिए दोनों सिरों पर संकेत रूप में चित्रों को दिया गया है जो बच्चों को कुछ न कुछ बोलने और लिखने को प्रोत्साहित करेगा, उन्हें खाली नहीं बैठने देगा। हमें ऐसे पाठों का पर्याप्त सदुपयोग करना चाहिए और इनका प्रयोग कर बच्चों को सुनना-बोलना-पढ़ना-लिखना सिखाने की ज़रूरत है।

प्राथमिक कक्षाओं में अभिनय शैली को बहुत प्रभावी माना जाता है। अतः हम शिक्षक-शिक्षिकाओं को इस शैली का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। इससे बच्चे सहज ही अध्यापन से जुड़ जाते हैं और



धड़ाम से बैठ गई।
उधर दीदी ने गिनती पूरी
की और इधर हम सब गोला
बनाकर बैठ गए।



एक बार यदि बच्चे आपके अध्यापन से जुड़ जाएँ तो आप जो भी उन्हें पढ़ाना चाहते हैं, उसे वे बड़ी ही खुशी-खुशी सहजता से ग्रहण करने लगते हैं। हालाँकि, यह भी हमें याद रखने की ज़रूरत है कि कविता हो या कहानी, वास्तव में अध्यापक का काम प्राथमिक तौर पर बच्चे के शब्द-भंडार को समृद्ध करना है। बच्चे जितना शब्द-भंडार की दृष्टि से समृद्ध होंगे, वे उस भाषा के एक अच्छे उपयोगकर्ता बन सकेंगे। इस पाठ को पढ़ाते हुए हम बच्चों को गणितीय अंक प्रणाली, रूप और आकार, रंग, फलों के साथ-साथ कुछ आंचलिक शब्दों आदि से भी परिचित करा सकते हैं।

चौथा पाठ है— पत्ते ही पत्ते। यह पाठ समग्रतावादी दृष्टिकोण (इंटिग्रेटेड अप्रोच) का एक बेहतरीन उदाहरण है। पेड़-पौधों, पत्तों, गोल, लंबे, खुरदरे, छोटे, बड़े आदि शब्दों से सुसज्जित यह पाठ हमें भाषा के साथ-साथ पर्यावरण अध्ययन, गणितीय संख्याओं, रूप, आकार आदि अवधारणाओं से भी परिचित कराने के सुअवसर उपलब्ध कराता है। पाठ के आरंभ का एक अंश देखें—

“दीदी बोली —

मैं पाँच तक गिनींगी।

गिनती शुरू करने से पहले तुम लोग गोला बनाकर बैठ जाओ।

एक...दो...तीन...चार...।”

इस अंश को यदि कक्षा में व्यावहारिक रूप प्रदान करके प्रस्तुत किया जाए तो एक से पाँच तक की संख्याओं, गोला, बैठने-खड़े होने आदि का ज्ञान बच्चों को कराया जा सकता है। गोला, तिकोन, आयताकार, चौकोर आदि जितने भी शब्द हैं, सब

प्रायः गणित में ही प्रयोग किए जाते हैं। इसी प्रकार अंकों का ज्ञान भी गणित के अंतर्गत दिया जाता है। इस पाठ में विभिन्न प्रकार के पत्तों के बारे में दिखाया-समझाया गया है। पेड़-पौधों और पत्तियों के बहाने रंगों, आकृतियों के बारे में बच्चों को जानकारी दी गई है। इस प्रकार कई विषयों को अपने आप में समेटे यह पाठ बच्चों के समग्र विकास के लिए एक आदर्श स्थिति निर्मित करता है। ऐसे पाठों में प्रयुक्त चित्रों की सहायता से बच्चों को आसपास के वातावरण में उपलब्ध ऐसे रंग, आकार के पत्ते, फूल, कंकड़ आदि चुनने की गतिविधि करा सकते हैं। जब हम शिक्षक अपनी निगरानी में बच्चों से इस प्रकार की गतिविधि कराएँगे तो निश्चय ही उन्हें बाहर की दुनिया के ज्ञान से जोड़ने में मदद मिलेगी और करके सीखने के सिद्धांत को भी साकार किया जा सकेगा।

आज दीदी पत्ते लेकर आई थीं।

कितने सारे पत्ते
तरह-तरह के पत्ते।

हमने पत्तों को अच्छे से देखा।
कुछ पत्ते लंबे थे...
तो कुछ गोल थे।
एकदम गोल...
कुछ छोटे...
कुछ बड़े...

27

2019-2020

पाँचवाँ पाठ है— पकौड़ी, यह एक कविता है। पकौड़ी एक ऐसा खाद्य पदार्थ है, जो लगभग सभी लोग खाते हैं और यह भारत में शायद ही ऐसा कोई घर हो, जहाँ न बनती हो। यानी सब खाते हैं और सबके घरों में बनती है। बच्चों को भी पकौड़ी बहुत पसंद होती है। इसी बाल मनोविज्ञान के आधार पर इस कविता को पुस्तक में जगह दी गई होगी। इस कविता में देखा जाए तो शब्दों की पुनरावृत्ति और पंक्तियों की तुकबंदी है। बच्चों को कविता पढ़ने अथवा पढ़कर सुनाने में बहुत अच्छी लगेगी। पकौड़ी में मानवीय गुणों का आरोपण कर उसे और खूबसूरती प्रदान की गई है। अमानव में मानवीय गुण-दोषों का आरोपण ही मानवीकरण अलंकार कहा जाता है। इससे काव्य-सौंदर्य में वृद्धि होती है। यहाँ भी छोटे बच्चों को अलंकार का ज्ञान कराना प्रयोजन नहीं है, बल्कि मात्र कविता की खूबसूरती को बढ़ाकर कविता को और अधिक संप्रेषणीय और ग्राह्य बनाना उद्देश्य है। दौड़ी-दौड़ी, छुन-छुन छुन-छुन में शब्दों की पुनरावृत्ति से शब्द और अर्थ दोनों की खूबसूरती बच्चों को अपनी ओर खींचने में समर्थ है। नाची, शरमाई, प्लेट, हाथ, उछली, मुँह, पहुँची, पेट, घबराई, आई, मेरे, मन, भाई (पसंद) आदि शब्दों में से अधिकांश बच्चों को पहले से ही ज्ञात होंगे। एकाध शब्द जिनके अर्थ ज्ञात न हों, उनका परिचय कराया जा सकता है। बच्चे भाई-बहन वाले भाई से तो परिचित होते हैं पर भाना यानी पसंद आना से प्रायः बच्चे इस अवस्था में परिचित नहीं होंगे। ऐसे अनेक शब्दों का बार-बार प्रयोग और उनके अर्थ बताकर अभ्यास द्वारा ज्ञान कराया जा सकता है।

ग्यारहवाँ पाठ है— पतंग। पतंग बच्चों को बहुत पसंद होती है। पतंग बनाने, उसे उड़ाने आदि के द्वारा

इस रोचक पाठ को बच्चों को पढ़ाना एक सुखद अनुभव देता है। यह पाठ भी कविता विधा में ही लिखा गया है। हवा की तेज रफ़्तार की तरह पतंग उड़ रही है। इस भाव को कविता में कुछ यूँ लिखा गया है— “सर-सर सर-सर उड़ी पतंग, फर-फर फर-फर उड़ी पतंग।” बच्चों को ऐसे पाठों को पढ़ना, पतंग बनाना, पतंग उड़ाना आदि बहुत अच्छा लगता है। बच्चों के लिए ‘पतंग’ पढ़ने की अपेक्षा खेलने का विषय अधिक है। इसीलिए बच्चों के इस मनोविज्ञान का इस्तेमाल करते हुए पतंग के सहारे बच्चों को भाषा-शिक्षण में प्रवृत्त करने की सफल कोशिश की गई है। यदि अध्यापिका इस बाल मनोविज्ञान को ध्यान में रखें तो निश्चित रूप से इस पाठ से बच्चों को जोड़कर बहुत अच्छे से उनके भीतर की सृजनात्मकता और खेल-खेल में सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ाकर भाषा-शिक्षण की मज़बूत बुनियाद रखी जा सकती है।

बारहवाँ पाठ है— गेंद और बल्ला। आज भारत के साथ-साथ दुनिया के कई देशों में सबसे ज़्यादा यही खेल खेला जाता है। बच्चे जो देखते हैं, वह जल्दी सीखते हैं। वे आज जिधर भी नज़र डालते हैं, चारों ओर क्रिकेट का खेल ही अधिक दिखाई देता है। बच्चे भी इस खेल से परिचित होने के कारण सहज ही जुड़ जाते हैं। गेंद-बल्ला के बहाने इस पाठ में मारपीट की प्रवृत्ति में सुधार का संदेश दिया गया है। पाठ का आरंभ संवाद से होता है, जिसे गेंद-बल्ले के संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

“गेंद ने बल्ले से कहा— तुम मुझे मारते क्यों हो?”

“बल्ला ने कहा, मारूँ नहीं तो खेल कैसे हो?”

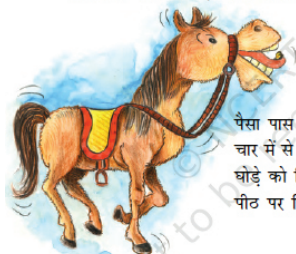
इसके बाद जब बल्ला मारता है और गेंद छुप

जाती है तो बल्ला उसे ढूँढ़ता है, किंतु गेंद नहीं मिलती। बल्ला निराश होकर जाने लगता है तो गेंद उसे पुकारती है और मिल जाती है। जब बल्ला खुशी-खुशी उसे लेकर जाने लगता है तो गेंद उसे दुबारा कहती है— “देखो, अब मुझे मारना मत।” इस छोटे से पाठ से बच्चों के मध्य मारपीट के प्रति उपेक्षा भाव उत्पन्न करने की कोशिश की गई है। परस्पर संवाद का रूप भी दिखाया गया है, जिससे बच्चों को भी आपसी संवाद करने की प्रेरणा मिलेगी। आप भी बच्चों को इस संदेश से परिचित करा सकती हैं, जिनसे उनमें लड़ाई-झगड़े की भावना के स्थान पर मिल-जुल कर रहने और खेलने की भावना का विकास होगा।



19. चार चने

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना तोते को खिलाते।
तोते को खिलाते तो टॉय-टॉय गाता,
टॉय-टॉय गाता तो बड़ा मजा आता।



पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना घोड़े को खिलाते।
घोड़े को खिलाते तो पीठ पर बिठाता,
पीठ पर बिठाता तो बड़ा मजा आता।

पैसा पास होता तो चार चने लाते,
चार में से एक चना चूहे को खिलाते।
चूहे को खिलाते तो दाँत टूट जाता,
दाँत टूट जाता तो बड़ा मजा आता।



102

2019-2020

उन्नीसवाँ पाठ है— चार चने। इसके सहारे बच्चों को सहजता के साथ संख्या ज्ञान कराया जा सकता है। साथ ही पशु-पक्षियों की आवाज़ों को भी पहचानने तथा याद करने का सुअवसर प्राप्त हो सकता है।

पशु-पक्षियों की आवाज़ें सुनने, पहचानने, बोलने को हम भाषा-शिक्षण के कौशलों के ज्ञान से जोड़कर देख सकते हैं। ऐसी गतिविधियों से बच्चे निश्चय ही भाषा-शिक्षण में दक्षता हासिल कर पाएँगे। तोता, घोड़ा आदि पाठ में आए पक्षियों के अतिरिक्त अन्य पक्षियों के नाम पूछकर उनके अपने ज्ञान को भी और विस्तार दिया जा सकता है, जिससे वे एक से दूसरे को गुणों के आधार पर जोड़ना सीख सकें।

तेईसवाँ और आखिरी पाठ है— सात पूँछ का चूहा। इस पाठ का भी गतिविधि और संख्या ज्ञान आधारित अभ्यासों के लिए बेहतर उपयोग किया जा सकता है। जो शब्द कहानी में बार-बार आ रहे हैं, उन्हें प्रत्येक बच्चे को एक-एक शब्द बाँट कर कहानी-वाचन शुरू किया जा सकता है। मान लीजिए, छ शब्द आपको ऐसे मिले जो कहानी में बार-बार आ रहे हैं। अध्यापिका को करना यह है कि कहानी में आने वाले उन छ शब्दों को बारी-बारी से सब बच्चों को एक-एक बाँट दें। जब छ बच्चों को एक-एक शब्द देने के बाद अगले बच्चे को देना हो तो पुनः उन्हीं छ शब्दों को पहले वाले क्रम में ही एक-एक करके बाँट दीजिए। यही क्रम आखिरी बच्चे तक चलता रहेगा। सब बच्चों को केवल अपना शब्द याद रखने को कहें। अब इस निर्देश के साथ कहानी वाचन करें अथवा किसी एक विद्यार्थी से करवाएँ कि जब भी उन्हें आवंटित किया गया शब्द कहानी में पढ़ा जाएगा, वे उठकर खड़े हो जाएँ और फिर तुरंत बैठ जाएँ। यदि लगातार एक ही शब्द कहानी वाचन में दो बार आता है तो उस शब्द वाले बच्चों को भी दो बार उठाना-बैठना होगा। अब आप कहानी वाचन आरंभ करें और देखेंगे कि बच्चों को इस कहानी से एक खेल मिल गया है और आपके

द्वारा दिए गए शब्दों की उन्हें पहचान हो गई है। इससे आप बच्चों के श्रवण कौशल का विकास, आकलन और शब्दों को पहचानने संबंधी योग्यता की परख कर सकते हैं। इसी अनुसार यह क्रम बदल कर बारी-बारी से कई बार हम इस खेल को करा सकते हैं। बच्चे इस प्रकार खेल-खेल में भाषा सीख जाएँगे।

हिंदी वर्णमाला एवं प्रासंगिक शिक्षण पद्धति

हिंदी वर्णमाला को *रिमझिम* के पृष्ठ संख्या 122 पर प्रकाशित किया गया है, जबकि किताब की कुल पृष्ठ संख्या 124 है। यह क्रम इस सोच का परिणाम है, जो ध्वनि-वर्ण पद्धति और समग्र भाषा पद्धति के बीच का बुनियादी फ़र्क है। ध्वनि-वर्ण पद्धति के द्वारा हम सब ‘अ’ से अनार और ‘क’ से कबूतर पढ़ते आए हैं। पर आज के समय में *रिमझिम* ने इस पद्धति को बदल दिया है। अब ‘अ’ से अनार और ‘क’ से कबूतर की जगह सीधे-सीधे बच्चों को अनार और कबूतर दिखाकर पढ़ाने की शुरुआत की जा रही है। बच्चे ‘अ’ और ‘क’ बेशक न पहचान सकें किंतु वे अनार और कबूतर को हिंदी के वर्णों के मुकाबले अधिक शीघ्रता और आसानी से पहचान लेते हैं। इस पद्धति को ही समग्र भाषा पद्धति के नाम से जाना जाता है। यदि हम इस पद्धति का अनुप्रयोग अपनी कक्षाओं में करें तो परंपरागत ध्वनि-वर्ण पद्धति के मुकाबले बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। हममें से अधिसंख्य लोग परंपरागत ध्वनि-वर्ण पद्धति के द्वारा शिक्षा अर्जित कर यहाँ तक पहुँचे हैं। यही कारण है कि समग्र भाषा पद्धति को लेकर अध्यापकों में अपेक्षित विश्वास अभी तक नहीं बन सका है। उम्मीद है, निकट भविष्य में समग्र भाषा पद्धति स्वयं को साबित कर सफलता हासिल कर सकेगी। इसके साथ-साथ यह भी

जोड़ना श्रेयस्कर है कि दोनों पद्धतियों में जिस पद्धति के अनुसार बेहतर ढंग से पढ़ाया जा सके, उस संबंध में अंतिम निर्णय कक्षाध्यापक को ही लेना उचित रहेगा। दोनों पद्धतियों को विषयवस्तु की आवश्यकतानुसार मिला-जुला कर प्रयोग करने के उदाहरण भी आम हैं। इसे संतुलित दृष्टिकोण (बैलेंस अप्रोच) कहा जाता है। वास्तव में किसी अध्यापक की कक्षा की सफलता-दर ही उसके अध्यापन के मूल्यांकन का आखिरी पैमाना है। इसलिए उसे अपनी अध्यापन पद्धति के निर्णय का अधिकार भी दिया ही जाना चाहिए। वैसे भी दुनिया की कोई तकनीक कक्षा शिक्षण (क्लासरूम टीचिंग) और अध्यापक को सशक्त तो बना सकती है, उसका स्थान नहीं ले सकती। अतः अध्यापक के समक्ष विकल्प रखते हुए अध्यापन की विधियों का विषयानुरूप निर्णय लेने का अधिकार उसे दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

हम जानते हैं कि प्राथमिक कक्षाओं में बच्चे लिपि की अपेक्षा चित्रों से जल्दी जुड़ जाते हैं। हम आम या अनार लिख कर बच्चों को पढ़ाएँ तो उनको अधिगम में परेशानी होती है, किंतु यदि उन्हें आम अथवा अनार के चित्र दिखाएँ तो वे बड़ी आसानी से पहचान लेते हैं। पूछने पर बोलने में भी बड़-चढ़कर दिलचस्पी लेते हैं। इस पुस्तक के आरंभ में ‘बड़ों से दो बातें’ शीर्षक से कुछ उपयोगी जानकारी अध्यापकों और अभिभावकों के लिए दी गई है। इसके अंतर्गत चित्रों की भूमिका और बच्चों की भाषा को लेकर समझ को भी स्पष्ट किया गया है। “चित्र शब्द-भंडार की वृद्धि, कल्पना,

तर्क, कौशल तथा अभिव्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं। भाषा सीखने की प्रक्रिया में चित्रों की विशेष भूमिका होती है। चित्र बनाना बच्चों के लिए लिखने, सीखने और अर्थ समझने का एक शुरुआती दौर है। चित्रों से जुड़े सवालों के ज़रिए बच्चों में चीज़ों को बारीकी से देखने और उन पर विस्तृत प्रतिक्रिया देने की आदत विकसित होती है।” अतः इन स्थितियों में चित्रों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। जैसे-जैसे बच्चे अगली कक्षा में जाते हैं, चित्रों की मात्रा कम एवं पाठ (टेक्स्ट) की मात्रा बढ़ती जाती है। धीरे-धीरे उच्चतर कक्षाओं में चित्रों का स्थान भी टेक्स्ट ले लेता है।

इस पाठ्यपुस्तक में कई ऐसे पाठ हैं, जो बच्चों की आयु, मानसिक-स्तर एवं रुचि के अनुसार बेहद प्रभावी हैं। कुछ पाठों को उदाहरण के तौर पर ऊपर विश्लेषित करने की कोशिश की गई है। हम इन पाठों में गतिविधि आधारित शिक्षा, खेल-खेल में शिक्षा, समग्रतावादी दृष्टि के साथ शिक्षा के विभिन्न अवसरों को कक्षा में निर्मित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रांतों की लोक शैली के चित्र भी (वरली शैली, मधुबनी पेंटिंग, पट्ट चित्र आदि) पुस्तक में दिए गए हैं, जो बच्चों के लिए उनकी स्थानीयता के साथ-साथ एक नई दुनिया से परिचय का रास्ता भी बनाते हैं। इनकी ओर बच्चों का ध्यान आकर्षित करते हुए स्थानीय लोककला शैली के कलाकारों को भी विद्यालय में आमंत्रित करके उनसे भी कुछ सीखने के अवसर उपलब्ध कराना बेहतर रहेगा।

संदर्भ

- रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- रा.शै.अ.प्र.प. *पढ़ना सिखाने की शुरुआत*. पृष्ठ सं. 1, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- रा.शै.अ.प्र.प. *रिमझिम-1*. पृ.सं. 2-3, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 10. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 18. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 25. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 42. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 76. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 76. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 80. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 80. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 81. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 102. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . पृ.सं. 115. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.
- . बड़ों से दो बातें शीर्षक से